

Namaze Eid Ka Tariqa (Hindi)



क्रमांक 30

# नमाजे ईद का तरीका



शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हजरते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इब्न्यास अत्तार क़दिरि २-जवी كاتب تراثنا  
العسائرية

مكتبة المدينة  
(دعوت اسلامی)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अब्ब्लाह! عُزُّوْجَلُ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी  
रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले । (المُسْتَطَرَف ج ١ ص ٤٤ دارالفکر بیروت)

नोट : अब्बल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना

व बकीअ

व मफ़िरत

13 शब्बालुल मुकर्रम 1428 हि.



## ( नमाजे ईद का तरीका )

येह रिसाला ( नमाजे ईद का तरीका )

शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत  
अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी  
دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त  
में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस  
में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब,  
ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## नमाज़े ईद का तरीका ( ह-नफी )

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला ( 10 सफ़हात ) मुकम्मल  
पढ़ लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ इस के फ़वाइद खुद ही देख लेंगे ।

### दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो आलम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार, महबूबे  
परवर दगार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुझ पर शबे  
जुमुआ और रोज़े जुमुआ सो बार दुरूद शरीफ़ पढ़े अल्लाह तआला उस की  
सो हाजतें पूरी फ़रमाएगा सत्तर आख़िरत की और तीस दुन्या की ।

(तاریخ و مشق لابن عساکر ج ۴ ص ۳۰۱ دار الفکر بیروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### दिल जिन्दा रहेगा

ताजदारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का  
फ़रमाने आलीशान है : जिस ने ईदैन की रात (या'नी शबे ईदुल फ़ित्र और शबे  
ईदुल अज़्हा) त-लबे सवाब के लिये क़ियाम किया (या'नी इबादत में गुज़ारा)  
उस दिन उस का दिल नहीं मरेगा, जिस दिन लोगों के दिल मर जाएंगे ।

(سَنَنِ ابْنِ مَاجَه ج ۲ ص ۳۶۵ حَدِيث ۱۷۸۲ دَار الْمَعْرِفَةِ بَيْرُوت)

फ़रमाते मुस्वफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा **اَللّٰهُمَّ** (س)। उस पर दस रहमतें भेजता है। (حدیث ۹۸ ص ۲)

## जन्नत वाजिब हो जाती है

एक और मक़ाम पर हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, फ़रमाते हैं : जो पांच रातों में शब बेदारी करे (या'नी जाग कर इबादत में गुज़ारे) उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है। ज़िल हिज्जह शरीफ़ की आठवीं, नवीं और दसवीं रात (इस तरह तीन रातें तो येह हुई) और चौथी ईदुल फ़ित्र की रात, पांचवीं शा'बानुल मुअज़्ज़म की पन्दरहवीं रात (या'नी शबे बराअत)। (الترغيب والترهيب ج ۲ ص ۹۸ حدیث ۲)

## नमाज़े ईद के लिये जाने से क़ब्ल की सुन्नत

हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर, मदीने के ताजवर, बि इज़्ने रब्बे अक्बर ग़ैबों से बा ख़बर, महबूबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ईदुल फ़ित्र के दिन कुछ खा कर नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और ईदे अज़्हा के रोज़ नहीं खाते थे जब तक नमाज़ से फ़ारिग़ न हो जाते। (سُنَنِ تِرْمِذِي ج ۲ ص ۷۰ حدیث ۵۴۲ دارالفकिरियूत) और “बुख़ारी” की रिवायत हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से है कि ईदुल फ़ित्र के दिन तशरीफ़ न ले जाते जब तक चन्द ख़जूरें न तनावुल फ़रमा लेते और वोह ताक़ होतीं। (بُخَارِي ج ۱ ص ۳۲۸ حدیث ۹۰۳ دارالکتب العلمیة بیروت)

## नमाज़े ईद के लिये आने जाने की सुन्नत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है : ताजदारे मदीना, सुरुरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ईद को (नमाज़े ईद के लिये) एक रास्ते से तशरीफ़ ले जाते और दूसरे रास्ते से वापस तशरीफ़ लाते। (سُنَنِ تِرْمِذِي ج ۲ ص ۶۹ حدیث ۵۴۱)

फरमाने मुखफा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरुद पाक पढ़ना भूल गया वह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

## नमाजे ईद का तरीका ( ह-नफी )

पहले इस तरह नियत कीजिये : “मैं नियत करता हूं दो रकअत नमाज ईदुल फ़ित्र (या ईदुल अज़हा) की, साथ छ<sup>6</sup> जाइद तक्बीरों के, वासिते अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के, पीछे इस इमाम के” फिर कानों तक हाथ उठाइये और अल्लाहु अक्बर कह कर हस्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और सना पढ़िये। फिर कानों तक हाथ उठाइये और अल्लाहु अक्बर कहते हुए लटका दीजिये। फिर हाथ कानों तक उठाइये और अल्लाहु अक्बर कह कर लटका दीजिये। फिर कानों तक हाथ उठाइये और अल्लाहु अक्बर कह कर बांध लीजिये या'नी पहली तक्बीर के बा'द हाथ बांधिये इस के बा'द दूसरी और तीसरी तक्बीर में लटकाइये और चौथी में हाथ बांध लीजिये। इस को यूं याद रखिये कि जहां कियाम में तक्बीर के बा'द कुछ पढ़ना है वहां हाथ बांधने हैं और जहां नहीं पढ़ना वहां हाथ लटकाने हैं। फिर इमाम तअव्वुज और तस्मिया आहिस्ता पढ़ कर अल हम्द शरीफ़ और सूरह जहर (या'नी बुलन्द आवाज़) के साथ पढ़े, फिर रुकूअ करे। दूसरी रकअत में पहले अल हम्द शरीफ़ और सूरह जहर के साथ पढ़े, फिर तीन बार कान तक हाथ उठा कर अल्लाहु अक्बर कहिये और हाथ न बांधिये और चौथी बार बिगैर हाथ उठाए अल्लाहु अक्बर कहते हुए रुकूअ में जाइये और काइदे के मुताबिक नमाज मुकम्मल कर लीजिये। हर दो तक्बीरों के दरमियान तीन बार “سُبْحَانَ اللَّهِ” कहने की मिक्दार चुप खड़ा रहना है।

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 781, ११, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००)

**फ़रमाने मुखफ़ा** : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْيَوْمَ لَمْ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख़्त हो गया । (अन) (ن)

## नमाज़े ईद किस पर वाजिब है ?

ईदैन (या'नी ईदुल फ़ि़त्र और बक़र ईद) की नमाज़ वाजिब है मगर सब पर नहीं सिर्फ़ उन पर जिन पर जुमुआ वाजिब है । ईदैन में न अज़ान है न इक़ामत । (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 779, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची, دُرْمُخْتَار ج 3 ص 101 دارالمعرفة بيروت)

## ईद का ख़ुत्बा सुन्नत है

ईदैन की अदा की वोही शर्ते हैं जो जुमुआ की, सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि जुमुआ में ख़ुत्बा शर्त है और ईदैन में सुन्नत । जुमुआ का ख़ुत्बा क़व्ल अज़ नमाज़ है और ईदैन का बा'द अज़ नमाज़ ।

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 779, 100, عالمگیری ج 1 ص 100)

## नमाज़े ईद का वक़्त

इन दोनों नमाज़ों का वक़्त सूरज के ब क़दर एक नेज़ा बुलन्द होने (या'नी तुलूए आफ़ताब के 20 मिनट के बा'द) से ज़हूवए कुब्रा या'नी निस्फ़ुन्हारे शर-ई तक है मगर ईदुल फ़ि़त्र में देर करना और ईदुल अज़हा जल्द पढ़ना मुस्तहब है । (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 781, 60, دُرْمُخْتَار ج 3 ص 60)

## ईद की अधूरी जमाअत मिली तो.....?

पहली रक़अत में इमाम के तक्बीरें कहने के बा'द मुक़तदी शामिल हुवा तो उसी वक़्त (तक्बीरे तहरीमा के इलावा मज़ीद) तीन तक्बीरें कह ले अगर्चे इमाम ने क़िराअत शुरूअ कर दी हो और तीन ही कहे अगर्चे इमाम ने तीन से ज़ियादा कही हों और अगर इस ने तक्बीरें न कहीं कि इमाम रुकूअ में चला गया तो खड़े खड़े न कहे बल्कि इमाम के साथ रुकूअ में जाए और रुकूअ में तक्बीरें कह ले और अगर इमाम को रुकूअ

**फरमाने मुखफा** عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी। (रु'बा)

में पाया और ग़ालिब गुमान है कि तकबीरें कह कर इमाम को रुकूअ में पा लेगा तो खड़े खड़े तकबीरें कहे फिर रुकूअ में जाए वरना **अल्लाहु अक्बर** कह कर रुकूअ में जाए और रुकूअ में तकबीरें कहे फिर अगर इस ने रुकूअ में तकबीरें पूरी न की थीं कि इमाम ने सर उठा लिया तो बाकी साकित हो गई (या'नी बक़िय्या तकबीरें अब न कहे) और अगर इमाम के रुकूअ से उठने के बा'द शामिल हुवा तो अब तकबीरें न कहे बल्कि (इमाम के सलाम फैरने के बा'द) जब अपनी (बक़िय्या) पढ़े उस वक़्त कहे और रुकूअ में जहां तकबीर कहना बताया गया उस में हाथ न उठाए और अगर दूसरी रक़अत में शामिल हुवा तो पहली रक़अत की तकबीरें अब न कहे बल्कि जब अपनी फ़ौत शुदा पढ़ने खड़ा हो उस वक़्त कहे। दूसरी रक़अत की तकबीरें अगर इमाम के साथ पा जाए फ़बिहा (या'नी तो बेहतर)। वरना इस में भी वोही तफ़्सील है जो पहली रक़अत के बारे में मज़कूर हुई। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 782, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००)

## ईद की जमाअत न मिली तो क्या करे ?

इमाम ने नमाज़ पढ़ ली और कोई शख्स बाकी रह गया ख़्वाह वोह शामिल ही न हुवा था या शामिल तो हुवा मगर उस की नमाज़ फ़ासिद हो गई तो अगर दूसरी जगह मिल जाए पढ़ ले वरना (बिगैर जमाअत के) नहीं पढ़ सकता। हां बेहतर येह है कि येह शख्स चार रक़अत चाशत की नमाज़ पढ़े। (दु'म्ख्तार ज ३, ६७)

## ईद के ख़ुत्बे के अहकाम

नमाज़ के बा'द इमाम दो ख़ुत्बे पढ़े और ख़ुत्बेए जुमुआ में जो चीजें सुन्नत हैं इस में भी सुन्नत हैं और जो वहां मक्रूह यहां भी मक्रूह।

फ़रमावे मुस्तहबاً صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (महारज़ान)

सिर्फ़ दो बातों में फ़र्क है एक यह कि जुमुआ के पहले खुत्बे से पेशतर ख़तीब का बैठना सुन्नत था और इस में न बैठना सुन्नत है। दूसरे यह कि इस में पहले खुत्बे से पेशतर 9 बार और दूसरे के पहले 7 बार और मिम्बर से उतरने के पहले 14 बार अल्लाहु अक्बर कहना सुन्नत है और जुमुआ में नहीं। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 783, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 998, 999, 1000)

इस मुबारक मिस्रअ, “दे दो ईदी में ग़म मदीने क्व”

के बीस हुरूफ़ की निस्बत से ईद के 20 आदाब

ईद के दिन येह उमूर मुस्तहब हैं :

❁ हजामत बनवाना (मगर जुल्फें बनवाइये न कि इंग्रेजी बाल)

❁ नाखुन तरशवाना ❁ गुस्ल करना ❁ मिस्वाक करना (येह उस के इलावा है जो वुजू में की जाती है) ❁ अच्छे कपड़े पहनना, नए हों तो नए वरना धुले हुए ❁ खुशबू लगाना ❁ अंगूठी पहनना (जब कभी अंगूठी पहनिये तो इस बात का ख़ास ख़याल रखिये कि सिर्फ़ साढ़े चार माशे से कम वज़न चांदी की एक ही अंगूठी पहनिये। एक से ज़ियादा न पहनिये और उस एक अंगूठी में भी नगीना एक ही हो, एक से ज़ियादा नगीने न हों, बिगैर नगीने की भी मत पहनिये। नगीने के वज़न की कोई कैद नहीं। चांदी का छल्ला या चांदी के बयान कर्दा वज़न वगैरा के इलावा किसी भी धात की अंगूठी या छल्ला मर्द नहीं पहन सकता) ❁ नमाज़े फ़ज़्र मस्जिदे महल्ला में पढ़ना ❁ ईदुल फ़ि़त्र की नमाज़ को जाने से पहले चन्द खजूरें खा लेना, तीन, पांच, सात या कमोबेश मगर ताक़ हों। खजूरें न हों तो कोई मीठी चीज़ खा लीजिये। अगर नमाज़ से पहले कुछ भी न खाया तो गुनाह न हुवा मगर



**फरमाने मुखफा** صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जो मुझ पर रोज़ जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (त्रिआमल)

इशा तक न खाया तो इताब (मलामत) किया जाएगा ❀ नमाजे ईद, ईदगाह में अदा करना ❀ ईदगाह पैदल चलना ❀ सुवारी पर भी जाने में हरज नहीं मगर जिस को पैदल जाने पर कुदरत हो उस के लिये पैदल जाना अफ़ज़ल है और वापसी पर सुवारी पर आने में हरज नहीं ❀ नमाजे ईद के लिये एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से वापस आना ❀ ईद की नमाज़ से पहले स-द-क़ए फ़ि़त्र अदा करना (अफ़ज़ल तो येही है मगर ईद की नमाज़ से क़ब्ल न दे सके तो बा'द में दे दीजिये) ❀ खुशी ज़ाहिर करना ❀ कसरत से स-दक़ा देना ❀ ईदगाह को इत्मीनान व वक़ार और नीची निगाह किये जाना ❀ आपस में मुबारक बाद देना ❀ बा'दे नमाजे ईद मुसा-फ़हा (या'नी हाथ मिलाना) और मुआ-नक़ा (या'नी गले मिलना) जैसा कि उमूमन मुसलमानों में राइज है बेहतर है कि इस में इज़्हारे मसरत है। मगर अम्द ख़ूब सूरत से गले मिलना महल्ले फ़ितना है ❀ ईदुल फ़ि़त्र (या'नी मीठी ईद) की नमाज़ के लिये जाते हुए रास्ते में आहिस्ता से तक्बीर कहें और नमाजे ईदे अज़्हा के लिये जाते हुए रास्ते में बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहें। तक्बीर येह है :

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَاللَّهُ الْحَمْدُ

तरजमा : अल्लाह ए़उ़ुजल्ल सब से बड़ा है, अल्लाह ए़उ़ुजल्ल सब से बड़ा है, अल्लाह ए़उ़ुजल्ल के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और अल्लाह ए़उ़ुजल्ल सब से बड़ा है, अल्लाह ए़उ़ुजल्ल सब से बड़ा है और अल्लाह ए़उ़ुजल्ल ही के लिये तमाम ख़ूबियां हैं।

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 779 ता 781, 1000149 स 1 ज वगैरा) عالمگیری

**फरमाने मुस्तहब** : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غُلُوبُ إِلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुद पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हाहत है। (रिप्ल)

## बकर ईद का एक मुस्तहब

ईदे अज़्हा (या'नी बकर ईद) तमाम अहकाम में ईदुल फ़ित्र (या'नी मीठी ईद) की तरह है। सिर्फ़ बा'ज़ बातों में फ़र्क़ है, म-सलन इस में (या'नी बकर ईद में) **मुस्तहब** यह है कि नमाज़ से पहले कुछ न खाए चाहे कुरबानी करे या न करे और अगर खा लिया तो कराहत भी नहीं।

(عالمگیری ج ۱ ص ۱۰۲ دارالفکر بیروت)

## “अल्लाहु अकबर” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से तक्बीरे तशरीक़ के 8 म-दनी फूल

❁ नवीं ज़ुल हिज्जतिल हुराम की फ़ज्र से तेरहवीं की अ़स्स तक पांचों वक़्त की फ़र्ज नमाज़ें जो मस्जिद की जमाअते मुस्तहब्बा के साथ अदा की गई उन में एक बार बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहना वाजिब है और तीन बार अफ़ज़ल इसे **तक्बीरे तशरीक़** कहते हैं। और वोह येह है :

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَلِلَّهِ الْحَمْدُ  
(تنوير الأبصار ج ۳ ص ۷۱, 785, 779 تا ج. 1, स. 779 تا 785, 71)

❁ तक्बीरे तशरीक़ सलाम फ़ैरने के बा'द फ़ौरन कहना वाजिब है। या'नी जब तक कोई ऐसा फ़े'ल न किया हो कि उस पर नमाज़ की बिना न कर सके म-सलन अगर मस्जिद से बाहर हो गया या क़स्दन वुजू तोड़ दिया या चाहे भूल कर ही कलाम किया तो तक्बीर साक़ित हो गई और बिला क़स्द वुजू टूट गया तो कह ले।

(دُرِّمُخْتَار وَرَدُّ الْمُخْتَار ج ۳ ص ۷۳ دارالمعرفة بیروت)

❁ तक्बीरे तशरीक़ उस पर वाजिब है जो शहर में मुक़ीम हो या जिस ने इस मुक़ीम की इक्तिदा की। वोह इक्तिदा करने वाला चाहे मुसाफ़िर

**फ़रमाने मुखफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (طبرانی)

हो या गाउं का रहने वाला और अगर उस की इक्तिदा न करें तो उन पर (या'नी मुसाफ़िर और गाउं के रहने वाले पर) वाजिब नहीं। (رُدُّ الْمُخْتَارِ ج 3 ص 74)

❁ मुक़ीम ने अगर मुसाफ़िर की इक्तिदा की तो मुक़ीम पर वाजिब है अगरचे इस मुसाफ़िर इमाम पर वाजिब नहीं। (رُدُّ الْمُخْتَارِ وَرُدُّ الْمُخْتَارِ ج 3 ص 74)

❁ नफ़ल, सुन्नत और वित्र के बा'द तकबीर वाजिब नहीं।

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 785, رُدُّ الْمُخْتَارِ ج 3 ص 74)

❁ जुमुआ के बा'द वाजिब है और नमाजे (बक़र) ईद के बा'द भी कह ले। (ऐज़न)

❁ मस्बूक़ (जिस की एक या ज़ाइद रकअतें फ़ौत हुई हों) पर तकबीर वाजिब है मगर जब खुद सलाम पैसे उस वक़्त कहे। (رُدُّ الْمُخْتَارِ ج 3 ص 76)

❁ मुन्फ़रिद (या'नी तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले) पर वाजिब नहीं। (الْجَوْهَرَةُ النَّبِيَّةُ ص 122) मगर कह ले कि साहिबैन (या'नी इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के नज़्दीक इस पर भी वाजिब है।

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 786)

(ईद के फ़ज़ाइल वगैरा की तफ़सीली मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब “फ़ैज़ाने र-मज़ान” से फ़ैज़ाने इदुल फ़ित्र का मुता-लआ फ़रमाइये)

ऐ हमारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें ईदे सईद की खुशियां सुन्नत के मुताबिक़ मनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। और हमें हज़ शरीफ़ और दियारे मदीना व ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की दीद की हकीक़ी ईद बार बार नसीब फ़रमा। اَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तेरी जब कि दीद होगी जभी मेरी ईद होगी

मेरे ख़ाब में तू आना म-दनी मदीने वाले



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ اَلَّذِيْنَ قَامَ لِيَوْمِ الْاَضْحَى مِنْ الشَّهْرِ الْحَرَامِ بِسُوْمِهِ الرَّغِيْبِ بِسُوْمِهِ الرَّغِيْبِ الرَّغِيْبِ

## सुन्नत की बहारें

تَحَلُّوْا لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तबलीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी सहरीक दा 'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज के बाद आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इत्तिमाअ में रिजाअ इलाही के लिये अच्छी अच्छी निव्यतों के साथ सारी रात गुजारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिकाने रसूल के म-दनी काफिलों में ब निव्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफर और रोजाना फिक्के मदीना के जरीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इश्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, **إِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**। इस की ब-र-कत से पावन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफरत करने और ईमान की हिफाजत के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। **إِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी काफिलों" में सफर करना है। **إِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**।

## मक-त-सतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाजार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : गुरीब नवाज मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाजार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

दुबली : A.J. मुडोल कोम्प्लेक्ष, A.J. मुडोल रोड, ओल्ड दुबली ब्रीज के पास, दुबली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

**मक-त-सतुल मदीना**

दा'वते इस्लामी



फ़ैज़ाने मदीना, श्री कोनिया बग्गीचे के सामने, मिरजापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया  
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net